चतुर खरगोश और शेर

किसी घने वन मे एक बहुत बडा शेर रहता था। वह रोज शिकार पर निकलता और एक ही नही, दो नही, कई-कई जानवरो का काम तमाम कर देता। जंगल के जानवर डरने लगे कि अगर शेर इसी तरह शिकार करता रहा तो एक दिन ऐसा आयेगा कि जंगल में कोई भी जानवर नही बचेगा।

सारे जंगल मे सनसनी फैल गई। शेर को रोकने के लिये कोई न कोई उपाय करना ज़रूरी था। एक दिन जंगल के सारे जानवर इकट्ठा हुए और इस प्रश्न पर विचार करने लगे। अन्त मे उन्होंने तय किया कि वे सब शेर के पास जाकर उनसे इस बारे मे बात करे। दूसरे दिन जानवरो के एक दल शेर के पास पहुंचा। उनके अपनी ओर आते देख शेर घबरा गया और उसने गरजकर पूछा, "क्या बात है, तुम सब यहां क्यों आ रहे हो?"

जानवर दल के नेता ने कहा, "महाराज, हम आपके पास निवेदन करने आये है। आप राजा है और हम आपकी प्रजा। जब आप शिकार करने निकलते है तो बहुत जानवर मार डालते है। आप सबको खा भी नहीं पाते। इस तरह से हमारी संख्या कम होती जा रही है। अगर ऐसा ही होता रहा तो कुछ ही दिनों मे जंगल मे आपके सिवाय और कोई भी नही बचेगा। प्रजा के बिना राजा भी कैसे रह सकता है? यदि हम सभी मर जायेंगे तो आप भी राजा नही रहेंगे। हम चाहते है कि आप सदा हमारे राजा बने रहे। आपसे हमारी विनती है कि आप अपने घर पर ही रहा करे। हर रोज स्वयं आपके खाने के लिए एक जानवर भेज दिया करेंगे। इस तरह से राजा और प्रजा दोनो ही चैन से रह सकेंगे।"

शेर को लगा कि जानवरों की बात में सच्चाई है। उसने पलभर सोचा, फिर बोला अच्छी बात है। मैं तुम्हारे सुझाव को मान लेता हूं। लेकिन याद रखना, अगर किसी भी दिन तुमने मेरे खाने के लिये पूरा भोजन नही भेजा तो मैं जितने जानवर चाहूंगा, मार डालूंगा। जानवरों के पास तो और कोई चारा नही। इसलिये उन्होंने शेर की शर्त मान ली और अपने-अपने घर चले गये।

उस दिन से हर रोज शेर के खाने के लिये एक जानवर भेजा जाने लगा। इसके लिये जंगल मे रहने वाले सब जानवरों मे से एक-एक जानवर, बारी-बारी से चुना जाता था। कुछ दिन बाद खरगोशो की बारी भी आ गई। शेर के भोजन के लिये एक नन्हे से खरगोश को चुना गया। वह खरगोश जितना छोटा था, उतना ही चतुर भी था। उसने सोचा, बेकार मे शेर के हाथो मरना मूर्खता है। अपनी जान बचाने का कोई न कोई उपाय अवश्य करना चाहिये, और हो सके तो कोई ऐसी तरकीब ढूंढनी चाहिये जिसे सभी को इस मुसीबत से सदा के लिए छुटकारा मिल जाये। आखिर उसने एक तरकीब निकाली।

खरगोश धीरे-धीरे आराम से शेर के घर की ओर चल पडा। जब वह शेर के पास पहुंचा तो बहुत देर हो चुकी थी।

भूख के मारे शेर का बुरा हाल हो रहा था। जब उसने सिर्फ एक छोटे से खरगोश को अपनी ओर आते देखा तो गुस्से से बौखला उठा और गरजकर बोला, "किसने तुम्हे भेजा है? एक तो पिद्दी जैसे हो, दूसरे इतनी देर से आ रहे हो। जिन बेवकूफो ने तुम्हे भेजा है मै उन सबको ठीक करूंगा। एक-एक का काम तमाम न किया तो मेरा नाम भी शेर नही।"

नन्हे खरगोश ने आदर से ज़मीन तक झुककर,"महारा, अगर आप कृपा करके मेरी बात सुन ले तो मुझे या और जानवरो को दोष नही देंगे। वे तो जानते थे कि एक छोटा सा खरगोश आपके भोजन के लिए पूरा नही पडेगा, 'इसलिए उन्होंने छह खरगोश भेजे थे। लेकिन रास्ते मे हमे एक और शेर मिल गया। उसने पांच खरगोशों को मारकर खा लिया।'"

यह सुनते ही शेर दहाडकर बोला, "क्या कहा? दूसरा शेर? कौन है वह? तुमने उसे कहां देखा?"

"महारा, वह तो बहुत ही बडा शेर है", खरगोश ने कहा,"वह ज़मीन के अन्दर बनी एक बडी गुफा मे से निकला था। वह तो मुझे ही मारने जा रहा था। पर मैंने उससे कहा, 'सरकार', आपको पता नही कि आपने क्या अन्धेर कर दिया है। हम सब अपने महाराज के भोजन के लिये जा रहे थे, लेकिन आपने उनका सारा खाना

खा लिया है। हमारे महाराज ऐसी बाते सहन नही करेंगे। वे ज़रूर ही यहाँ आकर आपको मार डालेगे।'"
"इस पर उसने पूछा, 'कौन है तुम्हारा राजा?' मैंने जवाब दिया, 'हमारा राजा जंगल का सबसे बडा शेर है।'
"महाराज, 'मेरे ऐसा कहते ही वह गुस्से से लाल-पीला होकर बोला बेवकूफ इस जंगल का राजा सिर्फ मैं हूं। यहां सब जानवर मेरी प्रजा हैं। मैं उनके साथ जैसा चाहूं वैसा कर सकता हूं। जिस मूर्ख को तुम अपना राजा कहते हो उस चोर को मेरे सामने हाजिर करो। मैं उसे बताऊंगा कि असली राजा कौन है, महाराज इतना कहकर उस शेर ने आपको लिवाने के लिए मुझे यहा भेजा है।"
खरगोश की बात सुनकर शेर को बडा गुस्सा आया और वह बार-बार गरजने लगा। उसकी भयानक गरज से सारा जंगल दहलने लगा मुझे फौरन उस मूर्ख का पता बताओ'', शेर ने दहाडकर कहा, "जब तक मैं उसे जान से नही मार दूँगा मुझे चैन नहीं मिलेगा"। 'बहुत अच्छा महाराज', खरगोश ने कहा, "मौत ही उस दुष्ट की सज़ा है। अगर मैं और बडा और मज़बूत होता तो मैं खुद ही उसके टुकडे-टुकडे कर देता।'"

"चलो, रास्ता दिखाओ," शेर ने कहा, "फौरन बताओ किधर चलना है?"
"इधर आइये महाराज, इधर", खरगोश रास्ता दिखाते हुआ शेर को एक कुएँ के पास ले गया और बोला, "महाराज, वह दुष्ट शेर ज़मीन के नीचे किले मे रहता है। जरा सावधान रहियेगा। किले मे छुपा दुश्मन खतरनाक होता है।"

"मैं उससे निपट लूँगा,"शेर ने कहा, "तुम यह बताओ कि वह है कहाँ ?"
''पहले जब मैंने उसे देखा था तब तो वह यही बाहर खडा था। लगता है आपको आता देखकर वह किले मे घुस गया। आइये मैं आपको दिखाता हूँ।''
खरगोश ने कुएं के नजदीक आकर शेर से अन्दर झांकने के लिये कहा। शेर ने कुएं के अन्दर झांका तो उसे कुएं के पानी मे अपनी परछाई दिखाई दी।
परछाई को देखकर शेर ज़ोर से दहाडा। कुएं के अन्दर से आती हुई अपने ही

दहाडने की गूंज सुनकर उसने समझा कि दूसरा शेर भी दहाड रहा है। दुश्मन को तुरंत मार डालने के इरादे से वह फौरन कुएं मे कूद पडा।
कूदते ही पहले तो वह कुएं की दीवार से टकराया फिर धडाम से पानी मे गिरा और डूबकर मर गया। इस तरह चतुराई से शेर से छुट्टी पाकर नन्हा खरगोश घर लौटा। उसने जंगल के जानवरो को शेर के मारे जाने की कहानी सुनाई। दुश्मन के मारे जाने की खबर से सारे जंगल मे खुशी फैल गई। जंगल के सभी जानवर खरगोश की जय-जयकार करने लगे।

सीख : घोर संकट की परिस्थितियों मे भी हमे सूझ बूझ और चतुराई से काम लेना चाहिए और आखिरी दम तक प्रयास करना चाहिए। सूझ बूझ और चतुराई से काम लेकर हम भयंकर संकट से उबर सकते है और बडे से बडे शक्तिशाली शत्रु को भी पराजित कर सकते हैं।

चतुर खरगोश और शेर

किसी घने वन में एक बहुत बड़ा शेर रहता था। वह रोज़ शिकार पर निकलता और एक ही नहीं, दो नहीं, कई-कई जानवरों का काम तमाम कर देता। जंगल के जानवर डरने लगे कि अगर शेर इसी तरह शिकार करता रहा तो एक दिन ऐसा आयेगा कि जंगल में कोई भी जानवर नहीं बचेगा।

सारे जंगल में सनसनी फैल गई। शेर को रोकने के लिये कोई न कोई उपाय करना ज़रूरी था। एक दिन जंगल के सारे जानवर इकट्ठा हुए और इस प्रश्न पर विचार करने लगे। अन्त में उन्होंने तय किया कि वे सब शेर के पास जाकर उनसे इस बारे में बात करें। दूसरे दिन जानवरों का एक दल शेर के पास पहुंचा। उनको अपनी ओर आते देख शेर घबरा गया और उसने गरजकर पूछा, "क्या बात है, तुम सब यहां क्यों आ रहे हो?"

जानवर दल के नेता ने कहा, "महाराज, हम आपके पास निवेदन करने आये हैं। आप राजा हैं और हम आपकी प्रजा। जब आप शिकार करने निकलते हो तो बहुत जानवर मार डालते हो। आप सबको खा भी नहीं पाते। इस तरह से हमारी संख्या कम होती जा रही है। अगर ऐसा ही होता रहा तो कुछ ही दिनों में जंगल में आपके सिवाय और कोई भी नहीं बचेगा। प्रजा के बिना राजा भी कैसे रह सकता है? यदि हम सभी मर जायेंगे तो आप भी राजा नहीं रहेंगे। हम चाहते हैं कि आप सदा हमारे राजा बने रहें। आपसे हमारी विनती है कि आप अपने घर पर ही रहा करें। हर रोज़ स्वयं आपके खाने के लिए एक जानवर भेज दिया करेंगे। इस तरह से राजा और प्रजा दोनों ही चैन से रह सकेंगे।"

शेर को लगा कि जानवरों की बात में सच्चाई है। उसने पलभर सोचा, फिर बोला अच्छी बात है। मैं तुम्हारे सुझाव को मान लेता हूं। लेकिन याद रखना, अगर किसी भी दिन तुमने मेरे खाने के लिये पूरा भोजन नहीं भेजा तो मैं जितने जानवर चाहूंगा, मार डालूंगा। जानवरों के पास तो और कोई चारा नहीं था। इसलिये उन्होंने शेर की शर्त मान ली और अपने-अपने घर चले गये।

उस दिन से हर रोज़ शेर के खाने के लिये एक जानवर भेजा जाने लगा। इसके लिये जंगल में रहने वाले सब जानवरों में से एक-एक जानवर, बारी-बारी से चुना जाता था। कुछ दिन बाद खरगोशों की बारी भी आ गई। शेर के भोजन के लिये एक नन्हे से खरगोश को चुना गया। वह खरगोश जितना छोटा था, उतना ही चतुर भी था। उसने सोचा, बेकार में शेर के हाथों मरना मूर्खता है। अपनी जान बचाने का कोई न कोई उपाय अवश्य करना चाहिये, और हो सके तो कोई ऐसी तरकीब ढूंढनी चाहिये जिससे सभी को इस मुसीबत से सदा के लिए छुटकारा मिल जाए। आखिर उसने एक तरकीब निकाली।

खरगोश धीरे-धीरे आराम से शेर के घर की ओर चल पड़ा। जब वह शेर के पास पहुंचा तो बहुत देर हो चुकी थी।

भूख के मारे शेर का बुरा हाल हो रहा था। जब उसने सिर्फ एक छोटे से खरगोश को अपनी ओर आते देखा तो गुस्से से बौखला उठा और गरजकर बोला, "किसने तुम्हें भेजा है? एक तो पिद्दी जैसे हो, दूसरे इतनी देर से आ रहे हो। जिन बेवकूफों ने तुम्हें भेजा है मैं उन सबको ठीक करूंगा। एक-एक का काम तमाम न किया तो मेरा नाम भी शेर नहीं।"

नन्हे खरगोश ने ज़मीन तक सिर झुकाकर, "महाराज, अगर आप कृपा करके मेरी बात सुन लें तो मुझे या और जानवरों को दोष नहीं देंगे। वे तो जानते थे कि एक छोटा सा खरगोश आपके भोजन के लिए पूरा नहीं पड़ेगा, 'इसलिए उन्होंने छह खरगोश भेजे थे। लेकिन रास्ते में हमें एक और शेर मिल गया। उसने पांच खरगोशों को मारकर खा लिया।"

यह सुनते ही शेर दहाड़कर बोला, "क्या कहा? दूसरा शेर? कौन है वह? तुमने उसे कहाँ देखा?"

"महाराज, वह तो बहुत ही बड़ा शेर है", खरगोश ने कहा, "वह ज़मीन के अंदर बनी एक बड़ी गुफ़ा में से निकला था। वह तो मुझे ही खाने जा रहा था। पर मैंने उससे कहा, 'सरकार', आपको पता नहीं कि आपने क्या अनर्थ कर दिया है? हम सब अपने महाराज के भोजन के लिए जा रहे थे, लेकिन आपने उनका सारा खाना खा लिया है। हमारे महाराज ऐसी बात सहन नहीं करेंगे। वे ज़रूर ही यहाँ आकर आपको खा डालेंगे।"

"इस पर उसने पूछा, 'कौन है तुम्हारा राजा?' मैंने जवाब दिया, 'हमारा राजा जंगल का सबसे बड़ा शेर है'।"

"महाराज, 'मेरे ऐसा कहते ही वह गुस्से से लाल-पीला होकर बोला, 'बेवकूफ़ इस जंगल का राजा सिर्फ़ मैं हूँ। यहाँ सब जानवर मेरी प्रजा हैं। मैं उनके साथ जैसा चाहूँ वैसा कर सकता हूँ। जिस मूर्ख को तुम अपना राजा कहते हो उसे मेरे सामने हाज़िर करो। मैं उसे बताऊँगा कि असली राजा कौन है।' महाराज इतना कहकर उस शेर ने आपको लिवाने के लिए मुझे भेज दिया है।"

खरगोश की बात सुनकर शेर के तन बदन में आग लग गई और वह ज़ोर-ज़ोर से गरजने लगा। उसकी भयानक गर्जना से सारा जंगल दहलने लगा। "मुझे फ़ौरन उस मूर्ख का पता बताओ", शेर ने दहाड़कर कहा, "जब तक मैं उसे जान से नहीं मार दूँगा मुझे चैन नहीं मिलेगा"। 'बहुत अच्छा महाराज', खरगोश ने कहा, "मौत ही उस दुष्ट की सज़ा है। अगर मैं बड़ा और ताक़तवर होता तो मैं ख़ुद ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता।"

"चल, रास्ता दिखाओ," शेर ने कहा, "फ़ौरन बताओ किधर चलना है?"

"इधर आइए महाराज, इधर", खरगोश रास्ता दिखाते हुए शेर को एक कुएँ के पास ले गया और बोला, "महाराज, वह दुष्ट शेर ज़मीन के नीचे किले में रहता है। ज़रा सावधान रहियेगा। किले में छुपा दुश्मन खतरनाक होता है।"

"मैं उससे निपट लूँगा," शेर ने कहा, "तुम यह बताओ कि वह है कहाँ?"

"पहले जब मैंने उसे देखा था तब तो वह यहीं बाहर खड़ा था। लगता है आपको आता देखकर वह किले में घुस गया। आइए मैं आपको दिखाता हूँ।"

खरगोश ने कुएँ के नज़दीक आकर शेर से अंदर झाँकने के लिए कहा। शेर ने कुएँ के अंदर झाँका तो उसे कुएँ के पानी में अपनी परछाईं दिखाई दी।

परछाईं को देखकर शेर ज़ोर से दहाड़ा। कुएँ के अंदर से गूँजती हुई अपनी ही दहाड़ की गूँज सुनकर उसने समझा कि दूसरा शेर भी दहाड़ रहा है। दुश्मन को तुरंत मार डालने के इरादे से वह फ़ौरन कुएँ में कूद पड़ा।

कूदते ही पहले तो वह कुएँ की दीवार से टकराया फिर धड़ाम से पानी में गिरा और डूबकर मर गया। इस तरह चतुराई से शेर से छुटकारा पाकर नन्हा खरगोश घर लौटा। उसने जंगल के जानवरों को शेर के मारे जाने की कहानी सुनाई। दुश्मन के मारे जाने की ख़बर से सारे जंगल में ख़ुशी फैल गई। जंगल के सभी जानवर खरगोश की जय-जयकार करने लगे।

सीख : बड़े संकट की परिस्थितियों में भी हमें धैर्य और बुद्धि से काम लेना चाहिए और अंतिम दम तक प्रयास करना चाहिए। धैर्य और बुद्धि से काम लेकर हम भयंकर संकट से उबर सकते हैं और बड़े से बड़े शक्तिशाली शत्रु को भी पराजित कर सकते हैं।

अनुवाद - विष्णु कौल जला